International Journal of Home Science 2021; 7(3): 231-233

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2021; 7(3): 231-233
© 2021 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 11-08-2021
Accepted: 14-09-2021

गीता सिंहा
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गीता सिंहा
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

प्रधानमंत्री उज्जवला योजना का गृहणी सशक्तिकरण पर पड़नें वाले प्रभाव का एक अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिला के संबंध में)

गीता सिंहा

सारांश
कई दशको से महिला उत्थान के उद्देश्य से सरकार एवं समाजसेवी संस्थाओं के द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रयास किये जा रहे है, जिसके लिए इन संस्थाओं के द्वारा अनेक योजनाओं का संचालन किया गया। गृहणियों के स्वास्थ्य की रक्षा एवं उनको सम्मान के साथ–साथ रसोईकार्य को आसान बनाते हुए उन्हे सशक्त बनानें के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का शुभारंभ 1 मई 2016 को किया गया है जो आज भी चल रहा है। अतः वर्तमान अध्ययन के द्वारा प्रधानमंत्री उज्जवला योजना का गृहणी सशक्तीकरण पर पड़नें वाले प्रभाव का पता लगानें का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा मुजफ्फरपुर जिला के ग्रामीण क्षेत्र कॉटी प्रखण्ड से 25–40 आयु वर्ग के 120 गृहणियों का चुनाव दैव निर्दशन के माध्यम से किया गया। अध्ययन के अनुसार केवल 10.83 प्रतिशत गृहणियों की उम्र 25–30 वर्ष थी जब उन्होनें गैस कनेक्शन को प्राप्त किया था, कम उम्र की गृहणियों को प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त करते समय प्रस्तुत किये जानें वाले दस्तावेजों को प्राप्त करनें में कुछ असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा था, जिसके कारण इस उम्र की गृहणियों की संख्या इस योजना के तहत गैस प्राप्त करनें में कम थी। अधिकांश (84.17 प्रतिशत) गृहणियों ने यह स्वीकार्य किया कि गैस कनेक्शन प्राप्त होनें पर उनके आत्मसम्मान में वृद्धि हुई है साथ ही समाज में भी उनके सम्मान में वृद्धि हुई है, इसके साथ 60.83 प्रतिशत गृहणियों नें यह स्पष्ट किया कि गैस पर भोजन पकानें से उनके रसोईकार्य में लगनें वाले समय में काफी कमी आई है। अध्ययन में यह पाया गया कि ऐसी कुल गृहणियॉ जिन्होनें गैस के इस्तेमाल से समय की बचत को स्वीकार किया उनमें से सबसे अधिक 30.14 प्रतिशत अपने बचे हुए समय को जीविका समूह में व्यतीत करती है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रधानमंत्री उज्जवला योजना एक वरदान के रूप में सामनें आया है, जिसको और भी व्यापक रूप से चलाये जानें के साथ–साथ और भी सुगम बनानें का आवश्यकता है।

संकेत शब्दः– उज्जवला, गृहणी, सशक्तिकरण, सम्मान

1. प्रस्तावनाः
सामाजिक रूप से हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज रहा है, महिलाओं को हमेशा यहां दोयम दर्जे का स्थान ही प्रदान किया गया है पहले महिलाओं को केवल घरेलू कार्य एवं संतान उत्पति के लिए एक साधन के रूप में देखा जाता था, महिलाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता ना होने के कारण उनकी सामाजिक और पारिवारिक स्थिति एक पराश्रित से अधिक और कुछ नहीं थी, जिसे हर कदम पर एक पुरुष के सहारे की जरूरत पड़ती थी। कई दशको से महिला उत्थान के उद्देश्य से सरकार एवं समाजसेवी संस्थाओं के द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रयास किये जा रहे है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तिकरण की बयार में अत्याधिक तेजी देखी गई है, और इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाओं के आत्मविश्वास में कई गुणा बढ़ोतरी हुई है और वे किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने लगी हैं। महिलाएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रह है। जहां सरकारें महिला उत्थान के उद्देश्य से नई–नई योजनाएं बनाने लगी हैं, वहीं कई गैर–सरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिए अपनी आवाज बुलंद करने लगे हैं। गृहणी सशक्तिकरण के तहत महिलाओं को ऐसे संसाधान प्रदान करनें का प्रयास भी किया जा रहा है जिससे वह अपने भीतर छिपी क्षमता को सही मायने में उजागर कर, बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सकें। गृहणियों के स्वास्थ्य की रक्षा एवं उनको सम्मान के साथ–साथ रसोईकार्य को आसान बनाते हुए उन्हे सशक्त बनानें के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का शुभारंभ 1 मई 2016 को किया गया है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों की गृहणियॉ आज भी जलावन पर भोजन पकानें के लिए विवश है क्योंकि उनके पास रसोई गैस उपलब्ध नहीं है। जिसके कारण उनको स्वास्थ्य के साथ साथ अन्य बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

उज्जवला योजना के माध्यम से देश की एपीएल, बीपीएल तथा राशन कार्ड धारक महिलाओं को रसोई गैस उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस योजना का संचालन केंद्र सरकार के पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा किया जा रहा है। गृहणी सशक्तीकरण के लिए उज्जवला योजना एक मील का पत्थर जरूर साबित होगा अगर इसका क्रियान्वयन सही दिशा में हो। रिसर्च इन्सटीट्यूट फॉर कम्पेसीनेट इकोनोमिक्स (2019) ने एक अध्ययन किया और बताया कि उज्ज्वला के 90 प्रतिशत लाभार्थी अभी भी खाना पकाने के लिए प्राथमिक रसोई ईंधन के रूप में ठोस ईंधन यानी कोयला, जलाऊ लकड़ी, फसल अवशेष और गाय के गोबर का उपयोग करते हैं (टाइम्स ऑफ इंडिया, पर प्रकाशित) 2 मई 2019)। इस अध्ययन में प्राथमिक कारण एलपीजी की तुलना में वहनीयता या बिना लागत और ठोस ईंधन की आसान उपलब्धता के रूप में बताया गया है। उज्जवला योजना के पहले चरण में 14743862 लाभार्थियों को उत्तर प्रदेश में गैस कनेक्शन प्रदान किया गया। इस योजना के पहले चरण में सन 2016 में लगभग 5 करोड़ परिवारों को गैस कनेक्शन प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। अप्रैल 2018 में इस योजना का दायरा बढ़ा दिया गया इसके अलावा इस योजना के अंतर्गत लक्ष्य को 5 करोड़ से बढ़ाकर 8 करोड़ कर दिया गया था। अगस्त 2019 तक लगभग 8 करोड़ महिलाओं को इस योजना के माध्यम से एलपीजी कनेक्शन प्रदान किया जा चुका है। अतः वर्तमान अध्ययन के द्वारा प्रधानमंत्री उज्जवला योजना का गृहणी सशक्तीकरण पर पड़नें वाले प्रभाव का पता लगानें का प्रयास किया गया है क्योंकि गृहणी सशक्तीकरण के लिए सरकार की जो भी योजना चलायी जा रही है उसका मूल्यांकन आवश्यक है।

2. शोध प्रकिया:

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा मुजफ्फरपुर जिला के ग्रामीण क्षेत्र कॉटी प्रखण्ड से 25–40 आयु वर्ग के 120 गृहणियों का चुनाव दैव निर्दशन के माध्यम से किया गया, उत्तरदाताओं के चुनाव के समय इस बात का विशेष ध्यान दिया गया कि इसमें सभी जाति तथा धर्म का प्रतिनिधित्व हो। सांख्यिकी विधि से आंकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया।

3. परिणाम एवं विचार विमर्श:

सारणी 1: उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें के समय उम्र

क0सं0	उम्र (वर्षो में)	उत्तरदाता	
		आवृति	प्रतिशत
1	25.30	13	10ण्83
2	30.35	48	40ण्00
3	35.40	59	49ण्17
कुल		120	100ण्00

सारणी सं0–1 गृहणियों के प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें के समय उम्र से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित कर रहा है। आंकड़ों के अनुसार गृहणियों के लगभग आधे समूह के द्वारा गैस प्राप्त करनें के समय उम्र 35–40 वर्ष के आस पास थी, 40 प्रतिशत की उम्र 30–35 वर्ष कनेक्शन प्राप्त करनें के समय थी। सबसे कम 10.83 प्रतिशत गृहणियों की उम्र 25–30 वर्ष थी जब उन्होनें गैस कनेक्शन को प्राप्त किया था। कम उम्र की गृहणियों को प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त करते समय प्रस्तुत किये जानें वाले दस्तावेजों को प्राप्त करनें में कुछ असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा था, जिसके कारण इस उम्र की गृहणियों की संख्या इस योजना के तहत गैस प्राप्त करनें में कम थी।

सारणी 2: उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें पर आत्मसम्मान में वृद्धि

क0सं0	आत्मसम्मान	उत्तरदाता	
		आवृति	प्रतिशत
1	हॉ	101	84.17
2	नहीं	19	15.83
कुल		120	100.00

सारणी सं0– 2 प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें पर आत्मसम्मान की वृद्धि होनें से संबंधित आंकडों को प्रदर्शित कर रहा है। आंकड़ों के अनुसार अधिकांश (84.17 प्रतिशत) गृहणियों ने यह स्वीकार्य किया कि गैस कनेक्शन प्राप्त होनें पर उनके आत्मसम्मान में वृद्धि हुई है साथ ही समाज में भी उनके सम्मान में वृद्धि हुई है। 15.83 प्रतिशत गृहणियों ने यह स्पष्ट किया कि उनको इस योजन से इस तरह के किसी भी सम्मान की वृद्धि नहीं हुई है।

सारणी 3: उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें से रसोई कार्य में सुगमता

क0सं0	सुगमता	उत्तरदाता	
		आवृति	प्रतिशत
1	खाना बनानें में आसानी	67	55.83
2	रसोईघर के वर्तन को साफ करनें में सुविधा	15	12.50
3	रसोईकार्य में आलस्य की कमी	11	09.17
4	जलावन की अपेक्षा गैस का उपयोग आसान	27	22.50
कुल		120	100.00

सारणी सं0– 3 प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें से रसोई कार्यो में सुगमता से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित कर रहा है। आंकड़ों के अनुसार आधे से अधिक (55. 83 प्रतिशत) गृहणियों नें इस बात को स्वीकार किया कि गैस पर उनको खाना बनानें में आसानी होती है, 12.5 प्रतिशत गृहणियों के अनुसार गैस के इस्तेमाल की वजह से रसोईघर के वर्तन को साफ करनें में आसानी होती है। 9.17 प्रतिशत के अनुसार रसोईघर में उज्जवला योजना के तहत गैस प्राप्त होनें के पश्चात् रसोईघर में आलस्य नहीं होता है। शेष 22.5 प्रतिशत का मानना है कि जलावन की अपेक्षा गैस का उपयोग आसान होता है।

सारणी 4: उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें के बाद रसोईकार्य से समय की बचत

क0सं0	समय की बचत	उत्तरदाता	
		आवृति	प्रतिशत
1	हॉ	73	60.83
2	नहीं	47	39.17
कुल		120	100.00

सारणी सं0– 4 प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें के बाद रसोईकार्य से समय की वचत से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित कर रहा है। सारणी के अनुसार 60.83 प्रतिशत गृहणियों नें यह स्पष्ट किया कि गैस पर भोजन पकानें से उनके रसोईकार्य में लगनें वाले समय में काफी कमी आई है। गैस की वजह से काफी कम समय में अलग–अलग तरह के पकवान बना सकती है, इसके साथ ही 39.17 प्रतिशत गृहणियों ने जवाब दिया कि भोजन पकानें के लिए गैस के इस्तेमाल से रसोईघर में लगनें वाले समय में कोई कमी नहीं आई है।

सारणी 5: उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें के बाद रसोईकार्य से बचे समय का उपयोग

क्र0सं0	समय का उपयोग	उत्तरदाता	
		आवृति	प्रतिशत
1	कृषि	14	19.18
2	पशुपालन	09	12.32
3	जीविका समूह	22	30.14
4	घरेलू कार्य	16	21.92
5	धनोपार्जन के दूसरे कार्यो में	09	12.33
6	कोई कार्य नहीं	03	04.11
कुल		73	100.00

सारणी सं0– 5 प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्राप्त होनें के बाद रसोईकार्य से होनें वाले समय की वचत के उपयोग से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित कर रहा है। ऑकड़ों के अनुसार ऐसी कुल गृहणियॉ जो गैस के इस्तेमाल से समय की बचत को स्वीकार की उनमें से सबसे अधिक 30.14 प्रतिशत अपने बचे हुए समय को जीविका समूह में व्यतीत करती है। जीविका समूह का निर्माण बिहार सरकार के द्वारा गृहणियों को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनानें के लिए किया गया है, जिसमें गृहणियॉ अनेको आर्थिक एवं सामाजिक कार्य का निष्पादन करते हुए अपने आप को सशक्त बना रही है। इसके साथ ही 19.18 प्रतिशत गृहणियॉ अपने बचे हुए समय को कृषि कार्यो को करते हुए व्यतीत कर रही थी, 12.32 प्रतिशत पशुपालन में तथा 21.92 प्रतिशत रसोई कार्य से बचे हुए समय का उपयोग अन्य घरेलू कार्यो को करनें में व्यतीत करती थी। 12.33 प्रतिशत गृहणियॉ अपनें बचे हुए समय का उपयोग धनोपार्जन करनें के लिए अन्य दूसरे कार्य कर रही थी, तथा शेष 4.11 प्रतिशत रसोईघर से बचे हुए समय में कोई कार्य नहीं करती थी। ऑकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रधानमंत्री उज्जवला योजना से गैस प्राप्त करनें के बाद रसोईघर से बचनें वाले समय का अधिकांश गृहणियॉ सदुपयोग करते हुए अपने आप को आर्थिक तथा सामाजिक रूप से सशक्त बना रही थी।

4. निष्कर्ष:

अध्ययन से यह स्पष्ट हो रहा है कि गृहणी सशक्तीकरण में प्रधानमंत्री उज्जवला योजना अपना अहम योगदान दे रहा है। गृहणियॉ रसोईघर में गैस इस्तेमाल से काफी समय बचा रही है और उसका सदुपयोग भी आर्थिक एवं सामाजिक गतिविधियों में भाग लेकर कर रही है जिससे गृहणियों को आत्मसम्मान की प्राप्ति होनें के साथ–साथ समाज में उनका स्थान भी ऊॅचाई की तरफ अग्रसित हो रहा है। है। अध्ययन में यह पाया गया कि ऐसी कुल गृहणियॉ जिन्होनें गैस के इस्तेमाल से समय की बचत को स्वीकार किया उनमें से सबसे अधिक 30.14 प्रतिशत अपने बचे हुए समय को जीविका समूह में व्यतीत करती है, बिहार में जीविका समूह महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक सम्पन्नता प्रदान करते हुए उन्हे सुरक्षा भी प्रदान करता है। अतः अध्ययन में यह पाया गया कि महिला सशक्तीकरण के लिए चलाये जाने वाले कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री उज्जवला योजना एक वरदान के रूप में सामनें आया है, जिसको और भी व्यापक रूप से चलाये जानें के साथ–साथ सुगम बनानें का आवश्यकता है।

सुझाव

- उज्जवला योजना के तहत गैस प्राप्त करनें के लिए अनिवार्य दस्तावेजों को और लचीला बनाये जानें की आवश्यकता है।
- गृहणियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाये जिससे वे अपने रसोईघर से बचे हुए समय का उपयोग आर्थिक सम्पन्नता के लिए कर सके।

शोध ग्रंथो की सूचीः–

1. रमोला वर्मा (2001), दिल्ली की कामकाजी महिलाऍ, सूर्या प्रकाशन, दिल्ली।
2. श्रीमति रानी छाबरा, (2005), भारत के महिला आन्दोलन के एक सक्रिय सदस्या।
3. वीण दास (1990), भारत में बालिका कॉन्सेप्ट, पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
4. Amegaha AK, Jaakkola JJK. Household air pollution and the sustainable development goals. Bull World Health Organ.2016; 94: 215–21. pmid:26966333
5. Biswas, Pradip Kumar. Rural Industrialization in West Bengal; institutions, innovations and growth. New Delhi; Manak Publishers 2003.
6. Dr. Ranjana Mall. Effect of education on adaptation & sustainability of Pradhanmantri Ujjawala Yojana. International Journal of Home Science 2019;5(1):260-262.
7. Srinivasan S, Carattini S. Adding fuel to fire? Social spillovers in the adoption of LPG in India. Ecological Economics 2020;167:106398.
8. www.pmujjwalayojana.in